कबीर सेन

संगीत से रचे रिश्ते

आशीष कुमार सेन

साभार: कबीर सेन

विश्वक्रांति, विद्रोह, आन्दोलन,
मर रहे लोग
शांति और प्रगति इसे संभव करती हैं
कैलि, न्यूयार्क, लंदन, एथेन्स
स्वतंत्र चुनाव, भ्रष्टाचार से मुक्ति,
तानाशाही और जन असंतोष
गुलामों का श्रम, उपभोग नहीं,
शांति स्थापना? नाकामयाब कोशिश
बर्लिन की दीवार एक ढह चुका
प्रतीक, तेल के लिए युद्ध? बात इतनी
सीधी नहीं
धार्मिक स्वतंत्रता भी नहीं आसां,
शैरॅन या अराफ़ात? दोनों ही नहीं
चाहिएं
आणविक धमकियां, संभालो अपने जेट,
देखो देश पर है कितना कर्ज़
वाशिंगटन डी.सी. से प्योंगयांग तक
लो यही शपथ, यदि शांति चाहते हो
तो सिर्फ गायो गीत
(कबीर सेन के गीत का हिंदी अनुवाद)

कबीर सेन के गीत एक सामाजिक चेतना से संपन्न युवा स्वर हैं। उनकी वंशावली से परिचित लोगों को उनकी प्रतिभा का स्फुटन सहज ही लगता है। अर्थशास्त्र के नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन का रैप कलाकार बेटा अपने संगीत को मंद्र थापों और मस्त धुनों का मिश्रण मानता है।

लंदन से आकर कैम्ब्रिज, मैसाच्यूसेट्स में बस गए स्वतंत्र संगीतकार और निर्माता कबीर हिप-हॉप की ओर आकर्षित हुए क्योंकि यह विचारों के आदान-प्रदान का जबर्दस्त माध्यम है। वह कहते हैं कि उनके गीत 'दूसरों के प्रति सम्मान, भिन्नताओं को लेकर सहज गौरव की भावना, संसार की खोज, अपनी राय व्यक्त करने, मानकों को चुनौती देने, पीड़ा से निपटने, स्वतंत्रता के लिए लड़ने और सहज भाव से जीने' का संदेश देते हैं।

उनका गीत 'एक्सप्लेनेशन' (स्पष्टीकरण) उनकी बात को बड़े सरल ढंग से व्यक्त करता है:

आइ वाज़ बॉर्न टु रॉक मिक्स....

(जड़ता को झकझोरने और कागज पर शब्द उतारने को मैं जन्मा
खेल-तमाशा दिखाने, बालकों को पढ़ाने, धुनें रचने को
ढोल, बाजे, एकतारे, मंजीरे मेरे खिलौने)

18 नवंबर को इकतीसवीं वर्षगांठ मनाने वाले कबीर स्कूलों और कॉलेजों में संगीत कार्यक्रम करके युवा वर्ग को आकर्षित करने का प्रयास करते हैं। वह स्पष्ट करते हैं, ''यह कार्यक्रम युवाओं से जुड़े रहने और एक बड़े दर्शक वर्ग के सामने अपनी रचनाएं प्रस्तुत करने का बढ़िया ढंग हैं।'' उनकी अधिकतर प्रस्तुतियां उनके हिप-हॉप शिक्षण कार्यक्रम का हिस्सा हैं जिसमें हिप-हॉप संगीत और संस्कृति के बारे में शैक्षणिक कार्यशाला के साथ-साथ संगीत प्रस्तुति भी होती है। पिछले साल उन्होंने न्यू यॉर्क सिटी में तीसरी कक्षा के बच्चों के लिए एक शैक्षणिक कार्यशाला आयोजित की- ये उनके सबसे कम उम्र के श्रोता थे।

कबीर बताते हैं कि लिखने और स्थिति के अनुसार गीतों की पुनर्रचना के उनके शौक के कारण उनकी रुचि हिप-हॉप में हुई। उनका एल्बम ''पीसफुल सॉल्यूशन्स'' में तीन सूत्र हैं- नकारात्मक ऊर्जा का सदुपयोग, जीवन की समझदारी और उल्लास, आत्म-खोज। उनका एक और एल्बम 'कल्चरल कनफ्यूजन' चार जगहों; इंग्लैंड, अमेरिका, भारत और इटली का प्रतिनिधित्व करने की अपने निजी कशमकश के बारे में है।

वैसे तो कबीर ब्रिटिश नागरिक हैं लेकिन वह कहते हैं, ''मेरा दो-तिहाई जीवन अमेरिका में बीता है और अब तो मैं अमेरिकी सा हो गया हूं।''

वह मानते हैं कि लंदन में बीते जीवन के शुरू के दस सालों ने उनके व्यक्तित्व और संगीत पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। हारवर्ड विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र और दर्शन पढ़ाने के लिए अमेरिका आने से पहले उनके पिता ब्रिटेन में ही रहते थे। कबीर की मां ईवा कॉलॉरनी (कबीर आठ साल के थे जब वह चल बसी थीं) इटली की रहने वाली थीं और बचपन में वह हर गर्मियों में इटली जाते थे।

उन पर अपने पिता का भी गहरा प्रभाव पड़ा है, ''बहुत छुटपन से मैं अपने परिवार में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और पहचान पर चर्चाएं सुनता रहा हूं। इनमें से कुछ अवधारणाएं 'पीसफुल सॉल्यूशन' में भी झलकती हैं।''

अमर्त्य सेन अपने बेटे के संगीत प्रेम के समर्थक हैं लेकिन कबीर हंसते हुए ध्यान दिलाते हैं, ''मुझे नहीं लगता कि उन्होंने मेरे अलावा कभी किसी हिप-हॉप कलाकार का संगीत सुना होगा।''

''क्या अमर्त्य सेन के बेटे को अवास्तविक अपेक्षाओं का बोझ ढोना पड़ता है?'' इस मुद्दे पर कबीर सेन एकदम साफ़ कहते हैं, ''अगर ऐसी अवास्तविक अपेक्षाओं हों भी तो वह मेरे पिता की तरफ से तो बिल्कुल नहीं हैं, न ही मैं उन्हें बोझ मानता हूं। एक अध्यापक, संगीतकार और हिप-हॉप कलाकार के तौर पर मेरी खुद से काफी ऊंची अपेक्षाएं हैं; मैं महत्वाकांक्षी हूं और मेरे लिए अवसरों की भी कमी नहीं है।''

बीटल्स से यू2 और रविशंकर से ड्यूक एलिंगटन तक-उनके प्रेरणास्त्रोत बहुत व्यापक हैं। कबीर मुस्कुराते हैं,''और भी बहुत से प्रेरणास्त्रोत हैं।''

उनके संगीत पर खासा भारतीय प्रभाव भी झलकता है। करीब 14 साल की उम्र में दादी से भेंट मे मिले तबलों की जोड़ी ने संगीत की अब तक उनके लिए अल्पज्ञात धारा से उनका परिचय करवाया। इस दौर में उन्होंने रविशंकर, ज़ाकिर हुसैन, अली अकबर खां और शक्ति का संगीत काफी सुना। कॉनेक्टीकट में वेज़्लेयन यूनिवर्सिटी में पढ़ते हुए उन्होंने तीन साल टी. विश्वनाथन से कर्नाटक शैली का गायन भी सीखा। कबीर कहते हैं, ''इन अनुभवों ने मेरे संगीत को प्रभावित किया है।'' उनके गीतों 'मिलेनियम ट्रैवल्स', 'राइज़' और 'ए बेटर टुमॉरो' पर इसकी ज़बर्दस्त छाप है।

उनके मन में अपने परिवार के साथ दादी अमिता सेन के पास शांति निकेतन में छुट्टियां बिताने की बहुत प्रिय स्मृतियां बसी हैं। ''अब वह नहीं रहीं लेकिन उन्होंने एक अद्भुत जीवन जिया''; कबीर याद करते हैं। उनके अनेक प्रेरणा स्रोतों में उनके दादा-दादी भी शामिल हैं। अपने गीत 'आन्सर्स' में कबीर अपनी प्रेरणा के संसार को कुछ इस तरह व्यक्त करते हैं:

वहशीयत और कत्ल को बदला कहते हैं
हमारे संस्थान प्रदूषण की तरह नफरत
फैलाते हैं
हम क्या करें? चलो हम मिलकर
अपनी ही तरह की मानसिक क्रांति कर
डालें

आशीष कुमार सेन *वाशिंगटन में रहते हैं और द वाशिंगटन टाइम्स, द ट्रिब्यून और आउटलुक के लिए लिखते हैं।*